प्राक्कथन

बस्तर क्षेत्र का इतिहास, देश के अन्य भागों के समान, मानव सभ्यता के विकास से संबंधित है । बस्तर का अपनी कला के क्षेत्र में देश में महत्वपूर्ण स्थान है । बस्तर की अपनी विशिष्ट पहचान वहां की भौगोलिक स्थिति, सघन वन, जनजातीय संस्कृति, प्राकृतिक संरचनाओं के कारण है । इस क्षेत्र के अंतर्गत प्राकृतिक गुफायें यथा कुटुमसार, कैलाशगुफा तथा चित्रकोट एवं तीरथगढ़ जैसे जल प्रपात महत्वपूर्ण आकर्षण के केंद्र हैं। यहां की आदिम जातियां तथा उनकी भाषा स्थानीय कलात्मक प्रकृति की हैं । बस्तर क्षेत्र में विद्यमान लौह अयस्क की पहाड़ियां तथा प्रमुख नदियों के कारण इसका महत्वपूर्ण स्थान है ।

इसीलिए यह क्षेत्र देश–विदेश के समाज शास्त्रीय, नृतत्व – शास्त्रीय , भूगोलविद्, भाषा वैज्ञानिक, जीव वैज्ञानिक, वनस्पति शास्त्रीय आदि की रूचियों का केंद्र रहा है । यही कारण है कि यहां पर देश विदेश के विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों में अनेक अनुसंधान एवं गणेषणायें हुई हैं ।

बस्तर के इतिहास एवं पुरातत्व के क्षेत्र में राजनीतिक इतिहास , अभिलेखों और मूर्तिशिल्प पर भी अनेक महत्वपूर्ण कार्य हुये हैं किन्तु स्थापत्य पर समेकित रूप से कोई कार्य नहीं हुआ है । बस्तर जैसे विशाल क्षेत्र के दुर्गम तथा सघन वनों के मध्य स्थित होने से अभी तक यहां की स्थापत्य कला का अध्ययन नहीं हुआ था । इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए **" बस्तर क्षेत्र के स्थापत्य का अध्ययन "** विषय पर शोध कार्य प्रस्तुत किया जा रहा है । जो बस्तर के प्रारंभिक काल 5 वीं शती ई. से परवर्ती काल 12 वीं शती ई. तक ज्ञात स्थापत्य के अध्ययन को एक सोपान के रूप में प्रस्तुत करने का विनम्र एवं महत्वपूर्ण प्रयास है ।

बस्तर क्षेत्र में विद्यमान आचंलिक कला एक तरफ जहां विविध रूपों को प्रस्तुत करती है वहीं भारतीय कला में वस्तर क्षेत्र की स्थापत्य कला का महत्वपूर्ण योगदान है । बस्तर की स्थापत्य कला में विभिन्न धर्मों का प्रवाव परिलक्षित होता है जिसमें शैव धर्म

का सर्वाधिक समूचे बस्तर क्षेत्र में तथा वैष्णव , बौद्ध एवं जैन धर्म का प्रभाव अपेक्षाकृत कम दिखाई पड़ता है । इस क्षेत्र के ज्ञात विभिन्न मंदिरों उत्तर भारतीय आर्य अथवा नागर शैली, दक्षिण भारतीय द्रविड़ शैली तथा क्षेत्रीय उड़ीसा, खजुराहो एवं चालुक्य कला शैली में निर्मित किये गये हैं । जिससे ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र के दुर्गम तथा सघन वनों के मध्य स्थित होने के बावजूद भी यहां पर देश के प्रमुख राजवंशों के शासकों के मध्य सामंजस्य था ।

प्रस्तुत शोधकर्म का भौगोलिक परिक्षेत्र वर्तमान बस्तर संभाग के तीनों जिले बस्तर, दंतेवाड़ा तथा कांकेर एवं प्राचीन कांकेर का सिहावा क्षेत्र जो कि सोमवंशी शासकों की राजधानी रही है, सम्मिलित हैं । इस शोध ग्रंथ के प्रथम अध्याय में प्रारंभ से अभी तक किये गये प्रमुख कार्यों की संक्षिप्त जानकारी , उसका महत्व तथा शोध प्रविधि का उल्लेख किया गया है । तदुपरांत बस्तर क्षेत्र की भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है । जिसमें नलवंशी , नागवंशी तथा सोमवंशी शासकों का परिचय महत्वपूर्ण है । इस अध्ययन का उद्देश्य राजनैतिक इतिहास तथा भौगोलिक अध्ययन प्रस्तुत करना नहीं है अतएव इनका अध्ययन संक्षिप्त रूप में किया गया है जिसमें प्रमुख प्राचीन पर्वतों तथा नदियों का भी उल्लेख है ।

इसके पश्चात् बस्तर क्षेत्र में ज्ञात मंदिरों का वर्गीकरण कालक्रमानुसार तथा धार्मिक सम्प्रदाय के आधार पर किया गया है । कालक्रम के अंतर्गत प्रारंभिक काल 5 वीं शती ई. में शासन करने वाले नल शासकों के काल से लेकर 12 वीं शती ई. तक शासन करने वाले नाग शासकों के काल की स्थापत्य कला को दो भागों में विभाजित किया गया है जिसके अंतर्गत प्रारंभिक काल में गढ़धनोरा तथा भोंगापाल जिला बस्तर के ईंट निर्मित संरचनाओं तथा परवर्ती काल में नाग शासकों के द्वारा निर्मित विभिन्न ज्ञात मंदिरों का अध्ययन सम्मिलित किया गया है । इस शोध ग्रंथ के चौथे अध्याय में परवर्ती काल में ज्ञात सभी मंदिरों का विस्तृत अध्ययन तथा उनके प्रमुख अंगों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है जो महत्वपूर्ण है । अध्याय 5 में बस्तर में ज्ञात एकमात्र बौद्ध चैत्य का विवरण दिया गया है जो नलवंशी शासन काल में चतुर्दिक प्रदेशों से संबंध स्थापित करने

की महत्वपूर्ण कड़ी है । अंत में ज्ञात सभी स्थापत्य संरचनाओं का तुलनात्मक तथा चतुर्दिक स्थापत्य कला का विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुये प्रस्तुत अध्ययन का समापन किया गया है ।

प्रस्तुत शोध कार्य के दौरान प्रारंभ से लेकर कार्य पूर्णता तक श्रद्धेय गुरूवर डॉ. एल.एस. निगम, रीडर, पं. रविशंकर शुक्ल विश्व विद्यालय, अध्ययनशाला रायपुर द्वारा, विश्व विद्यालयीन तथा घरेलू कार्यों में व्यस्त रहने के बावजूद भी उनके द्वारा अमूल्य सुझावों तथा कुशल मार्गदर्शन का लाभ मुझे निरंतर प्राप्त होता रहा है . उनके कुशल मार्गदर्शन एवं सुझाव के बाद ही यह शोधक र्य पूर्ण हो सका है । अतः उनके अमूल्य मार्गदर्शन एवं सक्रिय सहयोग के लिये मैं उनका चिरऋणी रहूंगा। डॉ. के.के. चक्रवर्ती, प्रमुख सचिव वन, पर्यावरण एवं संस्कृति विभाग(छ.ग.) शासन का आर्शीवाद भी शोधार्थी को प्राप्त होता रहा है । पुरातत्व, अभि., संग्रहालय, राजभाषा एवं संस्कृति विभाग के संचालक श्री प्रदीप पन्त द्वारा मुझे इस कार्य को पूर्ण करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है । अतः उनके प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूं ।

इस कार्य हेतु प्रेरणा देने वाले पुरातत्व अभि. एवं संग्रहालय विभाग रायपुर के वरिष्ठ विद्वान एवं पुरातत्ववेत्ता श्री जी.एल. रायकवार , श्री राहुल कुमार सिंह, संग्रहाध्यक्ष बिलासपुर को कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा पुनीत कर्तव्य है जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय निकालकर यथा समय इस कार्य को पूर्ण करने में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया है । तदुपरांत पुरातत्व अभि.एवं संग्र. विभाग रायपुर मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों श्री जे.पी. जैन, उपसंचालक रायपुर एवं श्री एस.एस. यादव, संग्रहाध्यक्ष , महंत घासी. स्मा. संग्रहालय, रायपुर एवं श्री जे. आर. भगत, संग्रहाध्यक्ष, जगदलपुर का आभारी हूं जिन्होंने क्षेत्रीय कार्य के दौरान आवश्यक सहयोग प्रदान किया है । तत्कालीन उपसंचालक श्री जी.के. चन्द्रौल पुरातत्व विभाग रायपुर (सम्प्रति इन्दौर) के द्वारा प्रस्तुत, छोटेडोंगर, गढ़धनोरा तथा भोंगापाल जिला बस्तर के अप्रकाशित प्रतिवेदेनों का मैंने सहारा लिया है । अतः उनके प्रति भी मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूं ।

प्रस्तुत शोध कार्य के दौरान मुझे कुछ वरिष्ठ विद्वानों का मार्गदर्शन प्राप्त करने

का सौभाग्य मिला । उनमें डॉ. विष्णु सिंह ठाकुर, रायपुर एवं डॉ.के.के. झा, (बस्तर) प्रमुख हैं । अतः इनके प्रति भी आभार व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं । हमारे विभाग के कर्मचारी साथी श्री पी.आर. कुंजाम, मानचित्रकार तथा श्री एस.एन. यादव फोटोग्राफर को धन्यवाद देना चाहूंगा जिन्होंने मेरे इस कार्य में मानचित्र तथा छायाछित्र तैयार कराने में सहयोग प्रदान किया है । महंत घासी. स्मा. संग्रहालय रायपुर के पुस्तकालय में पदस्थ कर्मचारी साथियों को भी धन्यवाद देता हूं जिन्होंने यथा समय मुझे आवश्यक पुस्तकें उपलब्ध करायी हैं ।

अंत में मैं अपनी पत्नी श्रीमती कलावती वर्मा तथा बच्चों को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने मुझे पारिवारिक दायित्वों से मुक्त रखा तथा सभी स्तर पर सहयोग प्रदान किया है । इसके अलावा टंकण कार्य में सहयोगी के रूप में प्रो. साईं-संगम कम्प्यूटर सेंटर, घड़ी चौक, रायपुर को मैं धन्यवाद देता हूं ।

(कामता प्रसाद वर्मा)

दिनांक 21 .02.2002